Downloaded from www.studiestoday.com

अपठित-बोध

अपठित का अर्थ है जो पहले न पढ़ा गया हो। अपठित बोध के अन्तर्गत विद्यार्थी को अपठित काव्यांश एवं गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखने होते हैं। इनका उत्तर लिखते समय निम्नलिखित मूलभूत बातों का ध्यान रखना चाहिए-

अपठित गद्यांश-

1. दिया गया गद्यांश अपठित होता है इसलिए इसके भाव को समझने के लिए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ना आवश्यक है।
2. तत्पश्चात् पूछे गए प्रश्नों के भाव को भी समझना अति आवश्यक है।
3. प्रश्नों के उत्तर अवतरण से ही हों तथा उनमें अतिरिक्त बातों की व्याख्या न हो इसलिए संभावित उत्तरों को अवतरण में ही रेखांकित कर लें।
4. रेखांकित संभावित उत्तरों को अपने शब्दों में अत्यंत सरल भाषा में लिखिए।
5. प्रश्नों के उत्तर सीधे और सटीक हों।
6. दो अंक वाले प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 से 25 शब्दों में लिखें।
7. एक अंक वाले उत्तर संक्षिप्त और सटीक हों।
8. जिस मूल बिंदु/बात का गद्यांश में वर्णन हो वही शीर्षक है।
9. शीर्षक संक्षिप्त (1-3 शब्द) एवं आकर्षक होना चाहिए।
10. उचित स्थानों पर विराम चिह्नों का प्रयोग अवश्य करें।

उदाहरणार्थ-

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

मनुष्य का जीवन अमूल्य है। जो संसार में विशिष्ट स्थान रखता है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। प्रकृति के समस्त कार्य नियत समय पर होते हैं। समय की गति बड़ी तीव्र होती है। जो उससे पिछड़ जाता है, वह सदैव पछताता रहता है। अत: आवश्यकता है समय के सदुपयोग की। समय वह धन है जिसका सदुपयोग न करने से वह व्यर्थ चला जाता है। हमें समय का महत्व तब ज्ञात होता है जब दो मिनट विलंब के कारण गाड़ी छूट जाती है। जीवन में वही व्यक्ति सफल हो पाते हैं जो समय का पालन करते हैं।

हमारे देश में समय का दुरुपयोग बहुत होता है। बेकार की बातों में व्यर्थ समय गंवाया जाता है। मनोरंजन के नाम पर भी बहुत समय गंवाया है। बहुत से व्यक्ति समय गंवाने में ही आनंद का अनुभव करते हैं। यह प्रवृत्ति हानिकारक है। समय को खोकर कोई व्यक्ति खुश नहीं रह सकता। जूलियस

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सीजर सभा में पाँच मिनट देर से पहुँचा और अपने प्राणों से हाथ धो बैठा। अपनी सेना के कुछ मिनट देर से पहुँचने के कारण नेपोलियन को नेल्सन से पराजित होना पड़ा। समय किसी की बाट नहीं जोहता।

(क) समय की क्या विशेषता है? (2)

(ख) समय कैसा धन है? (2)

(ग) समय के महत्व को न समझने के कारण किस-किस को क्या-क्या हानि उठानी पड़ी? (2)

(घ) 'अमूल्य' तथा 'आवश्यकता' शब्दों के क्रमशः उपसर्ग एवं प्रत्यय अलग कीजिए। (1)

(ङ) गद्यांश में से ऐसे शब्दों को छांटिए जिनका अर्थ क्रमशः निश्चित और आदत हो। (1)

(च) गद्यांश में प्रयुक्त किसी एक मुहावरे को छाँटिए। (1)

(छ) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। (1)

उत्तर-

(क) समय किसी प्रतीक्षा नहीं करता, समय की गति बड़ी तीव्र होती है। जो समय के साथ नहीं चलता वह पछताता है।

(ख) समय ऐसा धन है जिसका सदुपयोग न किए जाने पर वह व्यर्थ हो जाता है। इसका महत्व हमें तब पता चलता है जब थोड़े से विलंब के कारण हमारे महत्वपूर्ण कार्य छूट जाते हैं।

(ग) समय का महत्व न समझने के कारण जूलियस सीजर को अपनी जिंदगी से हाथ धोना पड़ा तथा नेपोलियन को नेल्सन से हारना पड़ा।

(घ) 'अमूल्य' शब्द में 'अ' उपसर्ग है तथा 'आवश्यकता' शब्द में 'ता' प्रत्यय है।

(ङ) नियत, प्रवृत्ति

(च) प्राणों से हाथ धोना।

(छ) शीर्षक - 'समय का महत्व'

विशेष-

1. उपर्युक्त अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सरल भाषा में दिए गए हैं।
2. शब्द सीमा अंकों के अनुरूप है।
3. शीर्षक आकर्षक, संक्षिप्त एवं प्रभावशाली है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अभ्यास कार्य-

(1)

मानव जीवन में परतंत्रता सबसे बड़े दु:ख है और स्वतंत्रता सबसे बड़ा सुख है। स्वावलंबी मनुष्य कभी परतंत्र नहीं होता, वह सदैव स्वतंत्र रहता है। दासता की श्रृंखलाओं से मुक्त आत्मनिर्भर मनुष्य कभी दूसरों का मुँह देखने वाला नहीं बनता। वह कठिन से कठिन कार्य को स्वयं करने की क्षमता रखता है। परमुखापेक्षी व्यक्ति न स्वयं उन्नति कर सकता है न अपने देश और समाज का कल्याण का सकता है। स्वावलंबन वह दैवी गुण है जिससे मनुष्य और पशु में भेद मालूम पड़ता है। पशु का जीवन, उसका रहन-सहन, उसका भोजन सभी कुछ उसके स्वामी पर आधारित रहता है, परंतु मनुष्य जीवन स्वावंलबनपूर्ण जीवन है, वह पराश्रित नहीं रहता। अपने सुखमय जीवनयापन के लिए वह स्वयं सामग्री जुटाता है, अथक प्रयास करता है। बात-बात में वह दूसरों का सहारा नहीं ढूँढ़ता, वह दूसरों का अनुगमन नहीं करता, अपितु दूसरे ही उसके आदर्शों पर चलकर अपना जीवन सफल बनाते हैं। जिस देश के नागरिक स्वावलंबी होते हैं, उस देश में कभी भुखमरी, बेरोज़गारी और निर्धनता नहीं होती, वह उत्तरोत्तर उन्नति करता जाता है। कौन जानता था कि जापान में इतना भयानक नरसंहार और आर्थिक क्षति होने के बाद भी वह कुछ ही वर्षों में फिर हरा-भरा हो जाएगा और फलने-फूलने लगेगा, परंतु वहाँ की स्वावलंबी जनता ने यह सिद्ध कर दिया कि सफलता और समृद्धि परिश्रमी और स्वावलंबी व्यक्ति के चरण चूमा करती है। एक जापानी तत्त्व ज्ञानी का कथन है कि ''हमारी दस करोड़ उँगलियाँ सारे काम करती हैं, इन ही उँगलियों के बल से संभव है, हम जगत को जीत लें।'' स्वावलंबन के अमूल्य महत्त्व को स्वीकार करते हुए उसके समक्ष कुबेर के कोष को भी विद्वान तुच्छ बना देते हैं।

स्वावलंबन से मनुष्य की उन्नति होती है और जीवन की सफलताएँ उस वीर का ही वरण करती हैं, जो स्वयं पृथ्वी खोदकर, पानी निकालकर अपनी तृष्णा शांत करने की क्षमता रखता है। कायर, भीरू, निरुद्योगी, अनुत्साही, अकर्मण्य और आलसी व्यक्ति स्वयं अपने हाथ-पैर न हिलाकर दैव और ईश्वर को, भाग्य और विधाता को जीवन भर दोष दिया करते हैं और रोना-झींकना ही उनका स्वभाव बन जाता है। पग-पग पर उन्हें भयानक विपत्तियों का सामना करना पड़ता है, असफलताएँ और अभाव उनके जीवन को जर्जर बना देते हैं। इस प्रकार उनका जीवन भार बन जाता है। उस भार को वहन करने की क्षमता उन अकर्मण्य और अनुद्योगी व्यक्तियों के अशक्त कंधों में नहीं होती।

प्रश्न-

(क) आत्मनिर्भर व्यक्ति किस प्रकार का होता है? वह अपने जीवन को सुखी कैसे बनाता है? (2)

(ख) स्वालंबन का श्रेष्ठ उदाहरण कहाँ और किस रूप में मिलता है? (2)

(ग) किस प्रकार के व्यक्ति भाग्य और विधाता को दोष देते हैं तथा उनका स्वभाव कैसा बन जाता है? (2)

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(घ) क्रमशः उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए- दासता, पराश्रित (1)

(ङ) अवतरण से 'प्यास' तथा 'डरपोक' शब्दों के समानार्थी शब्द छांटिए (1)

(च) विशेषण बनाइए- उन्नति, मानव (1)

(छ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। (1)

(2)

भारतीय धर्मनीति के प्रणेता नैतिक मूल्यों के प्रति अधिक जागरूक थे। उनकी यह धारणा थी कि नैतिक मूल्यों का दृढ़ता से पालन किए बिना किसी भी समाज की आर्थिक व सामाजिक प्रगति की नीतियाँ प्रभावी नहीं हो सकतीं। उन्होंने उच्चकोटि की जीवन-प्रणाली के निर्माण के लिए वेद की एक ऋचा के आधार पर कहा कि उत्कृष्ट जीवन-प्रणाली मनुष्य की विवेक-बुद्धि से तभी निर्मित होनी संभव है, जब 'सब लोगों के संकल्प, निश्चय, अभिप्राय समान हों, सबके हृदय में समानता की भव्य भावना जागृत हो और सब लोग पारस्परिक सहयोग से मनोनुकूल सभी कार्य करें। चरित्र-निर्माण की जो दिशा नीतिकारों ने निर्धारित की, वह आज भी अपने मूल रूप में मानव के लिए कल्याणकारी है। प्रायः यह देखा जाता है कि चरित्र और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा वाणी, बाहु और उदर को संयत न रखने के कारण होती है। जो व्यक्ति इन तीनों पर नियंत्रण रखने में सफल हो जाता है; उसका चरित्र ऊँचा होता है। सभ्यता का विकास आदर्श चरित्र से ही सम्भव है। जिस समाज में चरित्रवान व्यक्तियों का बाहुल्य है, वह समाज सभ्य होता है और वही उन्नत कहा जाता है।

चरित्र मानव-समुदाय की अमूल्य निधि है। इसके अभाव में व्यक्ति पशुवत् व्यवहार करने लगता है। आहार, निद्रा, भय आदि की वृति सभी जीवों में विद्यमान रहती है, यह आचार अर्थात् चरित्र की ही विशेषता है जो मनुष्य को पशु से अलग कर, उससे ऊँचा उठा मनुष्यत्व प्रदान करती है। सामाजिक अनुशासन बनाए रखने के लिए भी चरित्र-निर्माण की आवश्यकता है। सामाजिक अनुशासन की भावना व्यक्ति में तभी जागृत होती है जब वह मानव-प्राणियों में ही नहीं, वरन् सभी जीवधारियों में अपनी आत्मा का दर्शन करता है।

(क) हमारे धर्मनीतिकार नैतिक मूल्यों के प्रति विशेष जागरूक क्यों थे? (2)

(ख) विवेक बुद्धि क्या है? यह कब निर्मित होती है? (2)

(ग) सामाजिक अनुशासन से क्या तात्पर्य है? यह भावना व्यक्ति में कब जागृत होती है? (2)

(घ) 'उत्कृष्ट' और 'प्रगति' शब्दों के विलोम लिखिए। (1)

(ङ) 'आर्थिक' और 'मनुष्यत्व' शब्दों में प्रत्यय बताइए। (1)

(च) 'चरित्र' और 'निर्माण' शब्दों से विशेषण बनाइए। (1)

(छ) प्रस्तुत गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

जीवन की सरसता इस बात पर अवलम्बित है कि सहजता, और स्वाभाविकता को अपनाये रखा जाये। विचारों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर यथासम्भव मिलता रहे। उन्हें इस ढंग से पोषण मिलता रहे जिससे उनकी क्षमता सत्प्रयोजनों में नियोजित हो सके। मन:शास्त्री मानवीय विकास प्रक्रिया से उपर्युक्त सत्य को असाधारण महत्व देते हुए कहने लगे हैं कि मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन की बढ़ती समस्याओं का एक सबसे प्रमुख कारण है- उसका 'रिजर्व नेचर'। मानवीय स्वभाव में यह विकृति तेजी से बढ़ रही है। यही कारण है कि संसार में मनोरोगियों का बाहुल्य होता जा रहा है तथा कितने ही प्रकार के नये रोग पनप रहे हैं।

नदियों के पानी को बाँधकर रोक दिया जाए तो वह महाविप्लव खड़ा करेगा। रास्ता न पाने से फूट-फूट कर निकलेगा तथा अपने समीपवर्ती क्षेत्रों को ले डूबेगा। भावनाओं को दबा दिया जाये तो वे मानवीय व्यक्तित्व में एक अदृश्य कुहराम खड़ा करेंगे, जो नेत्रों को दिखाई तो नहीं पड़ता पर मानसिक असंतुलन के रूप में उसकी प्रतिक्रियाएँ सामने आती हैं। अपना आपा खण्डित होता प्रतीत होता है। दिशा दे देने पर नदियों के पानी से विभिन्न कार्य किए जाते हैं। बिजली उत्पादन से लेकर सिंचाई आदि का प्रयोजन पूरा होता है। भावों एवं विचारों को दिशा दी जा सके तो उनसे अनेक प्रकार के रचनात्मक काम हो सकते हैं। कला, साहित्य, कविता, विज्ञान के अविष्कार इन्हीं के गर्भ में पकते तथा प्रकट होते हैं।

भावनाओं एवं विचारों में में से कुछ ऐसे होते हैं जिनकी अभिव्यक्ति हानिकारक है पर उन्हें दबाव से तनाव की स्थिति आती है इससे बचाव का तरीका यह है कि भावनाओं को दूसरे रूप में अभिव्यक्त होने दिया जाए।

प्रश्न

(क) मन:शास्त्री मनुष्य की व्यक्तिगत समस्याओं का कारण किसे मानते हैं? (2)

(ख) जीवन की सरसता का क्या आधार है? (2)

(ग) भावनाओं को दबाने का क्या परिणाम होता है तथा भावों और विचारों को दिशा कैसे दी जा सकती है? (2)

(घ) 'साधारण' एवं 'संतुलन' शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। (1)

(ङ) 'अभिव्यक्ति' एवं 'स्वाभाविकता' शब्दों में क्रमश: उपसर्ग एवं प्रत्यय अलग कीजिए। (1)

(च) अवतरण से 'आधारित' एवं 'शक्ति' शब्दों के समानार्थी शब्द छाँटिए। (1)

(छ) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। (1)

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अपठित काव्यांश बोध

1. काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके अर्थ अर्थात् कवि क्या कहना चाहता है उस भाव को समझें।
2. याद रखें पूछे गए प्रश्नों के उत्तर काव्यांश की पंक्तियों को हुबहू उतार कर न दें अपितु उन पंक्तियों का सरल अर्थ समझकर अपनी भाषा (सरल, बोलचाल की) में दें।
3. उत्तर सरल और संक्षिप्त हों।
4. अगर किसी पंक्ति का आशय या भावार्थ लिखने के लिए आ जाए तो भाव संक्षेप में स्पष्ट करें, अपने विचार न लिखें, मौलिकता बनाए रखें।
5. उपमा, रूपक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, यमक, श्लेष, पुनरूक्ति प्रकाश इत्यादि अलंकारों का पूर्व अभ्यास होना अति आवश्यक है।

उदाहरण–

प्रश्न– निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में,
मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है।
प्रकृति नहीं डरकर झुकती है
कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के
उद्यम से, श्रमजल से।
ब्रह्मा का अभिलेख पढ़ा–
करते निरुद्यमी प्राणी,
धोते वीर कु–अंक भाल के
बहा ध्रुवों से पानी।
भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का,
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का।

(क) प्रकृति मनुष्य के आगे कब झुकती है? (1)

(ख) भाग्य-लेख कैसे लोग पढ़ते हैं? (1)

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(ग) भाग्यवाद को 'पाप का आवरण' और 'शोषण का शस्त्र' क्यों कहा गया है? (1)

(घ) इस काव्यांश से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? (1)

(ङ) 'प्रकृति नहीं डर कर झुकती है' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए। (1)

उत्तर–

(क) जब व्यक्ति उद्यम और परिश्रम करता है तब प्रकृति उसके सामने झुकती है।

(ख) जो लोग भाग्य के भरोसे रहते हैं और परिश्रम नहीं करते, वही भाग्य के लेख को पढ़ते हैं।

(ग) भाग्यवाद की ओट में ही पाप को बढ़ावा मिलता है तथा इसका सहारा लेकर लोग गरीबों का शोषण करते हैं इसलिए भाग्यवाद को 'पाप का आवरण' ओर 'शोषण का शस्त्र' कहा गया है।

(घ) सफलता भाग्य के भरोसे रहकर नहीं अपितु परिश्रम करने से मिलती है।

(ङ) मानवीकरण अलंकार

नोट–

1. उपयुक्त उत्तरों में काव्य पंक्तियों को उत्तर के रूप में हूबहू न उतार कर उनका भाव समझकर, सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है।
2. अलंकारों के पूर्वाभ्यास के कारण ही अलंकार की पहचान संभव हुई।
3. उत्तर संक्षिप्त एवं मौलिक हैं।

अभ्यास कार्य

(1)

मत काटो तुम ये पेड़
हैं ये लज्जावसन
इस माँ वसुन्धरा के।
इस संहार के बाद
अशोक की तरह
सचमुच तुम बहुत पछताओगे
बोलो फिर किसकी गोद में
सिर छिपाओगे?
शीतल छाया
फिर कहाँ से पाओगे?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कहाँ से पाओगे फिर फल?
कहाँ से मिलेगा
शस्य-श्यामला को
सींचने वाला जल?
रेगिस्तानों में
तब्दील हो जाएँगे खेत
बरसेंगे कहाँ से
उमड़-घुमड़कर बादल?
थके हुए मुसाफिर
पाएँगी कहाँ से
श्रमहारी छाया?

प्रश्न-

(क) कवि अशोक की तरह पछताने की बात क्यों करता है? (1)

(ख) कवि ने 'लज्जावसन' किसे कहा है? ये 'लज्जावसन' किसके हैं? (1)

(ग) पेड़ों के कटने से क्या कुप्रभाव पड़ेगा? (1)

(घ) 'रेगिस्तानों में तब्दील हो जाएँगे खेत' से कवि का क्या आशय है? (1)

(ङ) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए। (1)

(2)

जग में सचर-अचर जितने हैं, सारे कर्म निरत हैं।
धुन है एक न एक सभी को, सबके निश्चित व्रत हैं।
जीवन-भर आतप वह वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है।
रवि जग में शोभा सरसाता, सोम सुधा बरसाता।
सब हैं लगे कर्म में, कोई निष्क्रिय दृष्टि न आता।
है उद्देश्य नितांत तुच्छ तृण के भी लघु जीवन का।
उसी पूर्ति में वह करता है अंत कर्ममय तन का।

प्रश्न-

(क) इस संसार में सचर और अचर क्या कर रहे हैं तथा उन्हें क्या धुल है? (1)

(ख) सूर्य, चन्द्र और पत्ता किस प्रकार कर्मरत हैं? (1)

(ग) तिनका किस प्रकार अपने जीवन को सार्थक करता है? (1)

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(घ) काव्यांश में निहित उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए। (1)

(ङ) उपर्युक्त काव्यांश से अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण छाँटिए। (1)

(3)

निर्झर की बूँदे ही गुमसुम, चट्टानों में कितनी मचलीं
पत्थर तोड़ कूदतीं झर-झर, झर-झर-झर निर्भय निकलीं।
अब आगे क्या? किसी गर्त में पड़ सकती थीं।
बन न सकीं तो गड्ढे में ही सड़ सकती थीं।
नहीं रुकेंगी, नहीं झुकेंगी, आगे बढ़ती सबसे कहतीं-
''गति है तो जीवन है'' कहकर मार्ग बनाती, बहती रहतीं,
लात मारकर पत्थर जैसी बाधा को जिसने ललकारा।
वही आज इठलाती फिरती गंगा-यमुना जैसी धारा।
आँधी तूफानों में निश्चय अपना सीना तान के निकलें।।

प्रश्न-

(क) जीवन में गति न हो तो क्या परिणाम हो सकता है? (1)

(ख) जीवन के संदर्भ में ''आँधी-तूफान'' का क्या अर्थ है? (1)

(ग) गंगा-यमुना की जलधारा के इठलाने का क्या कारण है? (1)

(घ) निर्झर की बूँदों से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? (1)

(ङ) 'झर-झर' में कौन सा अलंकार है? (1)

Downloaded from www.studiestoday.com